# कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी और अच्युत सीताराम पटवर्धन

अच्युत पटवर्धन आधुनिक भारतीय राजनीति एवं भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम में बहुपरिचित एवं बहुश्रुत नाम है। भारत में सोशलिस्ट पार्टी के जन्मदाताओं में उनका नाम अग्रगण्य है। जिस समय में जय प्रकाश नारायण और राममनोहर लोहिया भारतीय क्षितिज पर नहीं उभरे थे, उस समय अच्युत पटवर्धन विश्वविद्यालय के प्रोफेसर की नौकरी छोड़कर मुम्बई में सविनय अवज्ञा आंदोलन का संचालन कर रहे थे। अच्युत पटवर्धन 1942 में अपने राजनैतिक जीवन के सर्वोच्च बिन्दु को स्पर्श करते हैं और लगातार 4 वर्षों तक मध्यान्ह के सूर्य की तरह ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरूद्ध चमकते रहते हैं। तमाम सारे प्रयासों के बावजूद 4 वर्षों तक पुलिस उन्हें स्पर्श भी नहीं कर सकी। इन 4 वर्षों में अच्युत राव ने बड़े ही कुशल ढंग से महाराष्ट्र के सतारा जिले में समानांतर सरकार का संचालन किया।

परन्तु भारतीय आकाश पर चमकता यह नक्षत्र बहुत शीघ्र ही विलुप्त हो गया। उन्होंने 1950 में ही सक्रिय राजनीति से संयास ले लिया। नाम और पद की लालसा तो उनमें थी ही नहीं। अतः वह जिद्दू कृष्णमूर्ति से जुड़कर महर्षि अरविन्द की तरह आध्यात्मिक क्षेत्र में चले गये। यद्यपि वह वर्ष 1992 तक जीवित रहे लेकिन उनका नाम भारत के राजनीतिक फलक से गायब हो गया। स्वतंत्र भारत के नेतृवर्ग ने जैसे उन्हें भुला ही दिया। यही कारण है कि अच्युत पटवर्धन पर बहुत कम शोध एवं लेखन कार्य हुए है।

अच्युत पटवर्धन का जन्म 05 फरवरी, 1905 को महाराष्ट्र के अहमदनगर में हुआ था। अच्युत के पिता, हरि केशव पटवर्धन, अहमदनगर के सम्पन्न एवं प्रसिद्ध वकील थे। उनके 6 पुत्र एवं 1 पुत्री थी। अच्युत दूसरे पुत्र थे। जब अच्युत 4 वर्ष के थे तब उनके चाचा सीताराम पटवर्धन, सेवानिवृत्त डिप्टी इंस्पेक्टर ऑफ स्कूल, ने उन्हें गोद ले लिया। 1917 में सीताराम पटवर्धन का निधन हो गया। अपने पीछे वह अकूत सम्पत्ति छोड़ गये थे। पटवर्धन परिवार प्रतिभाशाली चितपावन ब्राह्मणों में से एक था जो कोंकण से विस्थापित होकर समूचे महाराष्ट्र

में फैल गये थे। इनमें से अधिकांश आंग्ल भाषा में शिक्षित होकर प्रबुद्ध वर्ग का नेतृत्व करते थे।

अच्युत की माँ अमरावती की थीं जहाँ उनके पिता सबसे प्रसिद्ध वकील के रूप में जाने जाते थे। उन्होंने विभिन्न संस्थाओं को लाखों रूपये दान स्वरूप प्रदान किये थे। उनकी माँ अत्यंत सुंदर एवं संगीत में निपुण थीं। अच्युत का संगीत प्रेम उन्हें अपनी माँ से प्राप्त हुआ था। भाईयों में सबसे बड़े राव पटवर्धन थे। छह भाईयों के बीच केवल एक बहन विजया थीं जिन्हें सभी बहुत प्यार करते थे। अच्युत की माता जी स्वयं 16 वर्ष की आयु में जेल गयी थी। माता और भाई के पदचिन्हों पर चलते हुए विजया ने कॉलेज की पढ़ाई छोड़ दी और क्रांतिकारी कार्यों में भाई की सहायता करने लगी। इन्होंने अपने भाई और जयप्रकाश के प्राईवेट सेक्रेटरी के रूप में भी कार्य किया। अंततः पुलिस द्वारा गिरफ्तार किये जाने के बाद इन्हें 1 वर्ष का कठोर कारावास मिला।

अच्युत के पिता और चाचा, दोनों ही, थियोसोफिस्ट थे। इन्हें प्रारम्भ से ही लाड़–प्यार से पाला गया जिससे वह बड़े ही शांत और कोमल स्वभाव के बन गये। इन्हें प्रारम्भ से ही संगीत और पुस्तकों से प्रेम था और विद्यार्थी जीवन में इन्हें खेल–कूद में कोई विशेष रूचि न थी। जबकि इनके बड़े भाई चंचल स्वभाव के थे और खेलकूद में सबसे आगे रहते थे। अच्युत के जीवन पर उनके बड़े भाई का गहरा प्रभाव पड़ा जिसे स्वयं अच्युत स्वीकार करते हुए कहते हैं कि आज जिस स्थिति में वह है, उसका श्रेय श्री राव को है।

प्राथमिक शिक्षा के उपरांत अच्युत और राव, दोनों भाईयों का प्रवेश अहमदनगर सोसायटी हाई स्कूल में कराया गया। चूँकि अच्युत के पिता थियोसोफिस्ट थे, अतः हाई स्कूल की परीक्षा पास करने के बाद इनका प्रवेश बनारस स्थित सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज में करा दिया गया। इसकी स्थापना भारत में थियोसोफिस्ट सोसायटी की स्थापना करने वाली श्रीमती एनी बेसेण्ट ने किया था। इस कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ० जी० सी० अरूण्ड़ेल थे जो स्वयं एक प्रसिद्ध थियोसोफिस्ट थे। पटवर्धन बन्धुओं को प्रो० पी० के० तैलंग भी पढ़ाते थे जिनका अत्यधिक प्रभाव अच्युत पर पड़ा। प्रो० तैलंग एक आदर्शवादी शिक्षक थे जो अपनी सच्चरित्रता,

विचारों की महानता और प्रतिभा के लिये जाने जाते थे। प्रो० तैलंग के पिता भी एक बड़े विद्वान व्यक्ति थे। अपने पिता के पदचिन्हों पर चलकर, प्रो० तैलंग ने उन समस्त सद्‌गुणों का विकास किया जो इनके पिता में विद्यमान थे। मानवता की सेवा प्रो० तैलंग के जीवन का प्रमुख ध्येय था और वह इसमें सतत तल्लीन रहते थे। वह अपने जीवन के आदर्शों को अपने शिष्यों के अंदर भी उत्पन्न करना चाहते थे। वह एक तत्ववेत्ता और ज्ञानी ही नहीं थे बल्कि प्रसिद्ध जनसेवी और भारत की शुभकामना और सेवा में सदैव लीन रहते थे।

श्री अच्युत पटवर्धन पर प्रो० तैलंग के विचारों का गहरा असर पड़ा और कुछ ही दिनों में वह उनके शिष्य बन गये। बनारस में पटवर्धन बंधु डॉ० ज्ञानचंद के यहाँ रहते थे। डॉ० ज्ञानचंद कॉलेज में अर्थशास्त्र के प्रोफेसर थे और अच्युत के पिता के परम मित्र थे। यद्यपि डॉ० ज्ञानचंद स्वयं थियोसोफिस्ट नहीं थे परन्तु थियोसोफिस्ट विचारों में बड़ी आस्था रखते थे और उसका अध्ययन भी करते थे। कॉलेज में अच्युत का विषय अर्थशास्त्र नहीं था परन्तु डॉ० ज्ञानचंद से इन्हें अध्ययन को प्रेरणा मिली। कॉलेज के तमाम प्रोफेसर एवं विद्यार्थी डॉ० ज्ञानचंद से विचार विमर्श करने उनके घर आते रहते थे। अच्युत के तरूण मन पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा। डॉ० ज्ञानचंद को पुस्तकें पढ़ने का बहुत ही शौक था। अतः उनके अध्ययन के कमरे में प्रायः प्रत्येक विषय की नवीनतम पुस्तकें मिल जाती थी। अच्युत इन सभी पुस्तकों को पढ़ते थे। इतना ही नहीं अच्युत ने थोड़े ही समय में प्रो० तैलंग के व्यक्तिगत पुस्तकालय का दो बार सम्पूर्ण अध्ययन कर लिया था। प्रो० तैलंग सुरूचि संपन्न व्यक्ति थे। इसका भी अच्युत पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा। अच्युत अपने कपड़े एवं पुस्तकों आदि की व्यवस्था स्वयं करते थे, यहाँ तक कि भोजन बनाने एवं कपड़े धोने एवं अन्य साधारण गृह सम्बंधी कार्यों में रूचि लेते थे। भूमिगत दिनों में भी वह अपने साथी कार्यकर्ताओं के लिये रसोइये और धोबी का कार्य प्रसन्नतापूर्वक करते थे।

कॉलेज दिनों में पटवर्धन बंधु सर्वश्रेष्ठ भाषण देने विद्यार्थी के रूप में जाने जाते थे। राव पटवर्धन तो एक अच्छे स्पोर्ट्समैन भी थे। वह पढ़ाई में और कक्षा में सर्वश्रेष्ठ रहते थे और अच्युत दूसरे या तीसरे स्थान पर रहते थे। राव ने अंतर्विद्यालय भाषण में सर्वश्रेष्ठ स्थान

तो अच्युत ने दूसरा स्थान प्राप्त किया था। बाद में अच्युत कॉलेज पार्लियामेण्ट के अध्यक्ष भी चुने गये।

बनारस से एम० ए० की डिग्री द्वितीय श्रेणी में प्राप्त करने के बाद वह अध्ययन के लिए इंग्लैण्ड गये। वहाँ उन्होंने अर्थशास्त्र का विशेष रूप से अध्ययन किया। इंग्लैण्ड एवं अन्य यूरोपियन देशों की यात्रा के क्रम में वह अनेक समाजवादी नेताओं और विद्वानों से भी मिले। उन्होंने साम्यवाद और समाजवादी साहित्य का गहन अध्ययन किया। इंग्लैण्ड से वापस आने के बाद श्री अच्युत पटवर्धन को बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी में अर्थशास्त्र के प्रोफेसर का पद प्राप्त हुआ।

कुछ दिनों बाद ही सन् 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू हो गया। उस समय भी बंबई आंदोलन में अग्रणी था। आंदोलन छिड़ जाने पर अच्युत के सब भाई आंदोलन में कूद पड़े। सर्वप्रथम राव पकड़े गये परन्तु उमाशंकर और कृष्ण मैनन बहुत दिनों तक छिपकर काम करते रहे। कृष्ण मैनन नियमित रूप से कांग्रेस बुलेटिन निकालते थे। पूरे देश में समाचार पत्रों पर प्रतिबंध होने के कारण यह बुलेटिन ही आम लोगों तक समाचार पहुँचाता था। अंततः कृष्ण मैनन भी गिरफ्तार हो गये।

1932 में अपने भाईयों की गिरफ्तारी से विचलित होकर अच्युत पटवर्धन ने प्रोफेसर के पद से त्यागपत्र दे दिया और आंदोलन में भाग लेने हेतु बंबई जा पहुँचे। बम्बई में उस समय आंदोलन का संचालन करने हेतु क्रांतिकारी युवकों ने एक संगठन स्थापित किया था, जिसका नाम शेडो कैबिनेट था। इस संगठन का मुख्य कार्य क्रांतिकारी बुलेटिन प्रकाशित करना और आतंकवादी कार्यों को प्रोत्साहित करना था। अच्युत पटवर्धन ने शंकर के कल्पित नाम से बुलेटिन एवं क्रांतिकारी साहित्य का प्रकाशन प्रारम्भ किया। बम्बई की पुलिस ने कई मास के प्रयास के बाद उन्हें गिरफ्तार कर लिया।

गिरफ्तारी के बाद अच्युत को नासिक सेन्ट्रल जेल भेज दिया गया। यहाँ उनका सम्पर्क जयप्रकाश नारायण, अशोक मेहता, मीनू मसानी जैसे नेताओं से हुआ। इन सभी नेताओं के जेल में होने के कारण आंदोलन न सिर्फ धीमा हुआ बल्कि कुछ समय बाद समाप्त हो गया।

हजारों–लाखों युवाओं में घोर असंतोष व्याप्त हो गया। गांधी जी ने राष्ट्र की आत्मा को जगाया अवश्य परन्तु बढ़ते हुए राष्ट्र की नवोदित आकांक्षाओं और अंर्तराष्ट्रीय संघर्ष के सम्मुख उनके विचार अपर्याप्त प्रतीत होने लगे। मजदूरों एवं किसानों के लिये कांग्रेस में स्थान नहीं था। आंदोलन की विफलता से पीड़ित नासिक सेन्ट्रल जेल में बंद श्री अच्युत पटवर्धन, जयप्रकाश नारायण एवं मीनू मसानी आदि ने एक नई शक्ति खड़ी करने का निश्चय किया और मिलकर एक नये ढंग से कार्य की रूपरेखा बनाई। इस प्रकार 1934 में नासिक सेण्ट्रल जेल मे ही समाजवादी दल की नींव पड़ी। जेल में ही अच्युत ने जयप्रकाश के साथ मिलकर कांग्रेस समाजवादी दल का घोषणापत्र भी तैयार किया।

जेल से छूटने पर सन् 1934 में श्री अच्युत ने समाजवादी दल की कांफ्रेस के संगठन के प्रयास किये। कांग्रेस असेम्बलियों में जाने की बात सोच रही थी और दूसरी तरफ अच्युत, जयप्रकाश आदि कांग्रेस के वामपक्षी तत्वों को एकत्र करके एक क्रांतिकारी प्रोग्राम की तैयारी में जुटे हुए थे। अक्टूबर, 1934 में बंबई में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन हुआ। उस समय अच्युत ने कांग्रेस अधिवेशन में बड़े शक्तिशाली शब्दों में समाजवादी दल की स्थापना का उद्देश्य और कार्यक्रम समझाया। उन्होंने स्पष्ट रूप से समझाया की उनका कांग्रेस से किसी प्रकार का विरोध नहीं है, वह तो उसे देश की प्रतिनिधि एवं एकमात्र राष्ट्रीय संस्था मानते हैं। ''हम सबके त्याग, कष्ट एवं रक्त पर ही कांग्रेस की नींव खड़ी हुई है। सामान्य परिस्थितियों में हम एक नई संस्था खड़ा करना न चाहते, पर हम स्पष्ट रूप से देख रहे हैं कि कांग्रेस की वर्तमान नीति राष्ट्र को आगे बढ़ाने में सहायक नहीं हो सकती। असेम्बलियों से हमें आजादी नहीं मिलेगी वरन राष्ट्र ने अपने अपरिमित बलिदानों से जो कुछ प्राप्त किया है, हम उसे भी खो बैठेंगे। आज कांग्रेस के कार्यक्रम में किसानों, मजदूरों के लिये कोई विशिष्ट स्थान नहीं। हमें उनके सम्मुख स्वतंत्र भारत का एक स्पष्ट और निश्चित चित्र रखना होगा जिसमें उनकी शक्ति होगी। हमें इन्हें बताना होगा कि स्वतंत्र भारत के आर्थिक जीवन में उनकी आवाज और सत्ता होगी। हमें नव जागृत शक्तियों को जो धीरे–धीरे बढ़ रही है, अपने में नये रक्त की तरह मिलाना होगा तभी हम आजादी के निकट तेजी से राष्ट्र को ले जा सकते हैं।''

सन् 1936 में लखनऊ में कांग्रेस अधिवेशन हुआ। कांग्रेस अध्यक्ष पं० जवाहर लाल नेहरू समाजवादियों को साथ लेकर चलना चाहते थे। अतः अच्युत पटवर्धन को कार्यकारिणी समिति का सदस्य चुना गया। उस समय उनकी उम्र 30 वर्ष थी। उन्होंने विनम्रतापूर्वक यह पद अस्वीकार कर दिया।

सन् 1935 से 1941 तक उन्होंने युवाओं को समाजवाद की शिक्षा देने के लिये तमाम शिविरों का आयोजन किया जिसमें उन्हें समाजवादी कार्यक्रमों का शिक्षण–प्रशिक्षण प्रदान किया जाता था।

सन् 1939 में कांग्रेस मंत्रिमंडलों के त्यागपत्र के बाद महात्मा गांधी ने 1940 में व्यक्तिगत सत्याग्रह प्रारम्भ किया। अच्युत पटवर्धन को एक बार फिर जेल जाना पड़ा जेल में उनकी मुलाकात अशोक मेहता से हुई। इन्होंने अपना अधिकांश समय अध्ययन में व्यतीत किया। इस समय अच्युत पटवर्धन ने साम्प्रदायिक समस्या का प्रारम्भ, विकास और प्रगति का गहन अध्ययन किया और अशोक मेहता के साथ मिलकर ''भारत में साम्प्रदायिक त्रिकोण'' (Communal Triangle in India) नामक पुस्तक लिखी। इस पुस्तक के माध्यम से अच्युत ने यह बात स्थापित की कि साम्प्रदायिक समस्या ब्रिटिश साम्राज्यवाद की ही देन है।

अच्युत पटवर्धन के जेल से छूटने के 6 माह पश्चात् ही सन् 42 की ऐतिहासिक क्रांति प्रारम्भ हुई। इस विद्रोह में उनकी प्रतिभा, नेतृत्व करने की कुशलता और संगठन शक्ति का उत्कृष्ट रूप देखने को मिला। अगस्त 1942 से अप्रैल 1946 तक लगभग 4 वर्ष तक उन्होंने भूमिगत रहकर कार्य किया और कभी भी गिरफ्तार नहीं किये जा सके।

यह दौर अच्युत पटवर्धन के जीवन का उत्कृष्टतम दौर था। 9 अगस्त 1942 को महात्मा गांधी की गिरफ्तारी का समाचार जैसे ही बम्बई के लोगों को मिला, लोग सड़कों पर उतर गये। उस रात कांग्रेस के तमाम बड़े नेताओं की गिरफ्तारी हुई सेण्ट्रल रेलवे के दादर स्टेशन के पास जनुभाऊ पटवर्धन जी का घर था। राव साहेब–अच्युत राव जी के वह अनुज थे। अच्युत राव जी भी उनके ही घर रहते थे। पहले दिन की गिरफ्तारी से वह बच गये थे

लेकिन बम्बई के मेयर मेहर युसूफ अली और स्वयंसेवक दल के प्रमुख अशोक मेहता जी, इन दोनों को अन्य नेताओं के साथ गिरफ्तार किया गया था।

परन्तु सभी समाजवादी नेताओं की राय थी कि भूमिगत आंदोलन संगठित किया जाये और यही निर्णय थोड़ी देर में किया गया। जयप्रकाश नारायण जेल में थे। आचार्य नरेन्द्रदेव भी गिरफ्तार हो चुके थे। सिर्फ अच्युत जी और राम मनोहर लोहिया बाहर थे। इस विपदा की घड़ी में भूमिगत आंदोलन की सारी जिम्मेदारी अच्युतराव पटवर्धन जी पर आई। महाराष्ट्र में इस कार्य का अंजाम देने हेतु उनका कोई सानी नहीं था।

दादर में अच्युतराव जी के घर पर हुई सभा के उपरांत महाराष्ट्र के कार्यकर्ताओं ने अपने–अपने कार्यक्षेत्र में गोपनीय रूप से जाकर भूमिगत संघर्ष को जारी रखने का तथा उसके लिये संगठन तैयार करने का निर्णय लिया। नये कार्यकर्ताओं को भरती करना, काम का बंटवारा, पत्राचार के गोपनीय पत्र, परिपत्रक और बुलेटिन आदि साहित्य की आवाजाही हेतु पुलिस वालों का जिनपर शक नहीं हो सकता था, ऐसे स्मार्ट और तत्पर संदेशवाहकों की नियुक्ति करना, छपाई तथा साइक्लोस्टाईलिंग की व्यवस्था करना आदि बातों के बारे में निर्णय लिया गया। एस० एम० जोशी को महाराष्ट्र के भूमिगत आंदोलन का नेतृत्व सौंपा गया।

भूमिगत आंदोलन को जारी रखने के निर्णय के बाद जो पहला कार्यक्रम तय किया गया था वह था 9 सितम्बर, 1942 को, 9 अगस्त के ऐतिहासिक दिन के उपलक्ष्य में जगह–जगह पर प्रदर्शन–जुलूसों का आयोजन कर सरकारी कार्यालयों पर संगठित रूप से आक्रमण करना। अनेक गांधीवादियों ने अहिंसा को छोड़कर हिंसा को स्वीकृति दी। किशोरी लाल मशरूवाला ने हरिजन के जरिये इस बारे में मार्गदर्शन किया। आंध्र के लोगों ने विस्तृत परिपत्र जारी किया। भूमिगत ए० आई० सी० सी० के जरिये शीघ्र ही ''प्राणहानि किये बगैर शारीरिक तकलीफ न देते हुए'' सरकारी मशीनरी को जर्जर बनाने का आदेश दिया गया था।

भूमिगत आंदोलन संचालित करने के लिये अच्युत राव मध्यवर्गीय पारसी बाबा के भेष में बम्बई में रहते थे। आँखों पर जीरो नम्बर का चश्मा और होठों पर पतली मूंछों की वजह से उन्हें पहचानना मुश्किल होता था। अंधेरा होने के बाद वह घर से बाहर निकलते थे। वैसे

अपने निवास स्थान पर भी वह नहीं मिलते थे। उनके सचिव और सम्पर्क–व्यक्ति के रूप में काम करने वाले दो–चार लोगों के अलावा उनके निवास–स्थान का पता किसी को नहीं होता था। उनके निवास स्थानों में भी परिवर्तन होते रहते थे।

अच्युतराव फरार चल रहे थे परन्तु उनके भाई जनुभाई को गिरफ्तार नहीं किया गया। शायद उन्हें बाहर रखने से अच्युतराव को गिरफ्तार करना आसान होगा, ऐसा सरकार ने सोचा होगा। छोटी बहन विजया और भाई मधु पटवर्धन 42 के आंदोलन में पढ़ाई छोड़कर कूद पड़े। भूमिगत आंदोलन के दौरान अच्युतराव जी ''काका जी'' के नाम से जाने जाते थे। अखिल भारतीय स्तर पर अच्युत–अरूणा तथा प्रांतीय स्तर पर सतारा के नाना पाटील तथा खानदेश के उत्तम पाटील के सामने सरकार को घुटने टेकने पड़े। आखिर तक ये लोग सरकार के हाथ नहीं आये। राजनैतिक माहौल में परिवर्तन आने के बाद वर्ष 1946 में इन नेताओं के विरूद्ध निकाले गये वारण्ट रद्द किये गये। तब सर्वप्रथम अरूणा, बाद में अच्युत पटवर्धन, नाना पाटील आदि क्रांतिकारी स्वयं सामने आये। अगस्त क्रांति की लड़ाई में ब्रिटिश सरकार की यह सबसे बड़ी हार थी।

भूमिगत रहते हुए अच्युत पटवर्धन ने सतारा जिले में एक समानांतर सरकार का कुशलतापूर्वक संचालन किया। इसी वजह से लोग ''सतारयाच्चा सिंह'' अर्थात् सतारा का सिंह के नाम से पुकारते थे। यह 'पत्री सरकार' हिंसक ढंग से स्थापित एवं संचालित की जाती थी। यह 'पत्री सरकार' सरकारी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को कठोर तरीके से दण्डित करती थी। इस समानांतर सरकार के लोग सरकारी कार्यालय, खजाना और ट्रेनों को लूट लेते थे। इन सारी गतिविधियों को नाना पाटील कार्यान्वित करते थे। यद्यपि इनमें बहुत सारे ऐसे लोग भी शामिल थे जिन्हें नीति एवं सिद्धांतों से कुछ भी लेना देना नहीं था। यह समानांतर सरकार प्रत्येक गाँव तक फैल चुकी थी और इसने सरकारी मशीनरी को पूरी तौर पर ध्वस्त कर दिया था।

जनता ने विदेशी शासन का बहिष्कार कर दिया। जनता ने अपनी अदालतें बनायी, अपनी स्वयंसेवक सेना संगठित की। अदालतों का बहिष्कार एवं भूमिकर देना बंद कर दिया

गया। जनता की अपनी सरकार कर वसूल करती थी। यहाँ तक कि डाक ले जाने और लाने का कार्य भी क्रांतिकारियों की समानान्तर सरकार ही करती थी जिसके नेता अच्युत पटवर्धन थे। आपका कार्यक्षेत्र सतारा ही था और वहाँ से आप नियमित रूप से ''भारत छोड़ो'' बुलेटिन प्रकाशित करते थे। आप कभी–कभी कांग्रेस रेडियो से जनता के नाम संदेश भी ब्राडकास्ट करते थे। सतारा में क्रांतिकारी गतिविधियों से सरकार घबरा गयी। सन् 42 में प्रायः प्रत्येक प्रमुख रेलवे लाईन, टेलिफोन व टेलीग्राम के तार, पुल और डाकघर ध्वस्त कर दिये गये थे। सतारा का सम्बंध सारे भारत से टूट गया था। क्रांतिकारियों की अपनी पुलिस थी जो ''पत्री सरकार'' के निर्णय को न मानने वालों को दण्ड देती थी और जनता में कठोर अनुशासन रखती थी। यह लोग हथियारों से पूर्णतः सुसज्जित थे।

सतारा की जनता पर ब्रिटिश सरकार का कठोर दमनचक्र चलाया गया परन्तु सतारा की जनता ने अंत तक उस ''पत्री सरकार'' और उसके नेताओं के बारे में कुछ भी नहीं बताया। अच्युत राव निरंतर 4 वर्षों तक पुलिस की आँखों में धूल झांककर सतारा की ''पत्री सरकार'' को संचालित करते रहे। बीच में थोड़े समय के लिये बंगाल के भीषण अकाल के दौरान अरूणा आसफ अली के साथ उन्होंने बंगाल का दौरा किया और अकाल से उत्पन्न गंभीर परिस्थितियों का अवलोकन एवं अध्ययन किया।

अप्रैल–मई, 1943 में बम्बई के भूमिगत ठिकानों पर छापे पड़े जिसमें भास्कर राव (नाना साहब गोरे), दादा मराठे (शिराभाऊ) जैसे क्रांतिकारी नेता गिरफ्तार हो गये। कुछ समय बाद साने गुरूजी, एस० एम० जोशी, विनायक नाना डेंगले, करकरे और मधु लिमये भी गिरफ्तार कर लिये गये।

मई, 1944 में महात्मा गांधी को जेल से रिहा कर दिया गया। धीरे–धीरे तमाम क्रांतिकारी नेता रिहा होने लगे। काका जी (अच्युत राव) और बेगम (अरूणा आसफ अली) गांधी जी से मिले। अच्युत राव पूरी तरह से आश्वस्त थे कि शिमला समझौता असफल होगा।

जुलाई, 1945 के अंत तक ब्रिटेन के चुनावों में जीतकर लेबर पार्टी सत्ता में आ गयी। परन्तु अच्युतराव का मानना था कि ब्रिटेन की टोरी पार्टी, वहाँ की साम्राज्यवादी नौकरशाही

तथा कलकत्ता के क्लाइव स्ट्रीट के ब्रिटिश पूंजीपति, सत्तांतरण को आसानी से नहीं होने देंगे। अतः स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये एक नये जंग की तैयारी करना आवश्यक होगा।

ब्रिटिश लेबर पार्टी की विजय के बाद सर स्टैफर्ड क्रिप्स ने विचार रखा था कि अस्थायी सरकार की स्थापना और अंतिम सत्ता हस्तांतरण को मद्देनजर रखते हुए कुछ करना चाहिये। इसके लिये नये चुनाव कराने और भारत का भावी संविधान बनाने के लिये संविधान सभा का गठन हो, यह सुझाव प्रधानमंत्री एटली और वायसराय वावेल को पसंद आया। सर्वप्रथम केन्द्रीय असेम्बली तथा बाद में प्रांतीय विधानसभा के चुनावों के कार्यक्रम घोषित किये गये। मुस्लिम लीग और कांग्रेस ने नये चुनावों का स्वागत किया। केन्द्रीय असेम्बली का मतदाता समूह कुल जनसंख्या का मात्र 3 – 3.5 प्रतिशत था जबकि प्रांतीय विधान सभाओं का मतदाता समूह कुछ ज्यादा यानि 13–14 प्रतिशत था।

दिसम्बर, 1945 के दूसरे सप्ताह में आयोजित कांग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक में 1942 के आंदोलन तथा कांग्रेस की अहिंसा नीति के बारे में एक प्रस्ताव पारित किया गया। यह प्रस्ताव स्वयं गाँधी जी ने तैयार किया था। उसमें कांग्रेस की परम्परागत नीति का समर्थन किया गया था। प्रस्ताव में 1942 के जनता के स्वतः स्फूर्त कार्यों, उसकी वीरता, साहस तथा त्याग को सराहा तो गया लेकिन यह भी कहा गया कि सार्वजनिक सम्पत्ति को जलाना, टेलीग्राम के तारों को काटना, रेलगाड़ियों को पटरी से उतारना आदि बातें अहिंसा की उस नीति के तहत नहीं आतीं जिसे 1920 से लेकर कांग्रेस ने लगातार अपनाया है।

इस प्रस्ताव से समाजवादियों को गहरा धक्का लगा। अरूणा आसफ अली और अच्युत पटवर्धन ने मौलाना अबुल कलाम आजाद को एक विरोध पत्र लिखा और सारी कार्यवाही की जिम्मेदारी स्वयं पर ली।

फरवरी, 1946 में अरूणा आसफ अली के खिलाफ वारण्ट को रद्द कर दिया गया और वह कलकत्ता में प्रकट हुई। जिस समय वह बम्बई पहुँची, नौसेना विद्रोह फूट पड़ा। उन्होंने नौसैनिकों के पक्ष में खुलकर भाषण दिया। सरदार पटेल, समाजवादियों से नाराज हो गये। अच्युतराव आदि लोग अरूणा को बहका रहे हैं, ऐसी शिकायत उन्होंने गाँधी जी से की। उस

वक्त सरदार पटेल की आंदोलनकारी समाजवादियों के प्रति जो नाराजगी हुई, वह हमेशा के लिए बन गयी।

जिस समय प्रांतीय चुनावों के परिणाम घोषित किया जा रहे थे उसी समय पैथिक लारेन्स, क्रिप्स तथा अलेकजेण्डर, इन तीन लेबर मंत्रियों का शिष्टमण्डल भारत आया। नये माहौल में जयप्रकाश नारायण, राममनोहर लोहिया जैसे राजबंदियों को जेल में बंद रखना सर्वथा अनुचित है, अतः उन्हें तत्काल मुक्त किया जाये, यह मांग गाँधी जी बार–बार वायसराय के पास दोहरा रहे थे। उसका परिणाम सामने आया। अरूणा आसफ अली पर जो वारण्ट लगाया गया था, वह पहले ही रद्द किया जा चुका था। अब अच्युतराव पटवर्धन के खिलाफ जारी वारण्ट भी वापस लिया गया। पटेल के विराध के कारण बम्बई प्रदेश कमेटी ने उनके सम्मान सभा में भाग नहीं लिया। तब आम जन के सहयोग से 12 अप्रैल को उनके सम्मानसभा का आयोजन हुआ जो अरूणा आसफ अली के सम्मान सभा से बड़ी थी। ठीक उसी दिन यानी 12 अप्रैल को जे० पी० और लोहिया को भी रिहा किया गया।

नाना पाटील, सतारा के क्रांतिकारियों में सबसे प्रसिद्ध नेता थे। उन पर लगे वारण्ट को रद्द करने में बम्बई की कांग्रेस सरकार आनाकानी कर रही थी। फरवरी से मई, 1946 के दौरान बम्बई में प्रचण्ड सभाओं का दौर चल रहा था।

3 मई 1946 के एक परिपत्र के माध्यम से अच्युतराव जी ने 18, 19, 20 मई को बम्बई में देश भर के चुनिन्दा आमंत्रितों की बैठक आयोजित की। आमंत्रित किये गये अगस्तवादियों तथा समाजवादियों की बैठक वरली के रेडीमनी मैंशन के एक हाल में आयोजित की गयी थी। जयप्रकाश नारायण अध्यक्ष थे। सही मायने में वह बैठक थी। कुर्सियों, टेबलों का ठाठबाठ नहीं था। उपस्थित लोगों में अरूणा आसफ अली, राम मनोहर लोहिया तथा अच्युत पटवर्धन के अलावा एस० एम०, नाना साहेब, पुरूषोत्तम, अशोक मेहता, रामनंदन मिश्र आदि अनेक प्रतिनिधि उपस्थित थे। चर्चा का स्वरूप अनौपचारिक था। उसका कुल नजरिया अगस्तवादी गुट के रूप में काम करने के पक्ष में नहीं था। कांग्रेस समाजवादी पक्ष को अधिकृत रूप से पुनर्जीवित किया जाये, ऐसी ज्यादातर लोगों की राय थी। 16 मई की त्रिमंत्री योजना, संविधान

समिति में भूमिका–के प्रश्न मुँह बाये खड़े थे। अनौपचारिक बैठक में त्रिमंत्री योजना को कांग्रेस द्वारा स्वीकार किया जाना चाहिये, ऐसी लगभग सभी नेताओं की राय थी। अच्युत राव एवं अरूणा आसफ अली के कठोर विरोध के कारण संविधान समिति के बहिष्कार का निर्णय लिया गया। संभवतः जयप्रकाश जी की भी इसमें सहमति थी।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक मुम्बई में होने वाली थी। लेकिन उससे पहले अरूणा आसफ अली, जयप्रकाश, अच्युत पटवर्धन और लोहिया के नाम से कैबिनेट मिशन योजना की निंदा करने वाला एक संयुक्त वक्तव्य जारी किया गया। संधिकाल में गर्वनर–जनरल के विशेषाधिकारों को समाप्त करना, प्रजा को नागरिकता स्वतंत्रता के अधिकार देना, केन्द्रीय सत्ता सिर्फ तीन विषय तक सीमित न रखते हुए उसे और मजबूत बनाना तथा प्रांतीय स्वायत्तता का गला घोंटने वाला अनिवार्य गुट योजना रद्द करना आदि मुद्दों को उठाया गया। सीमित मताधिकार पर आधारित प्रांतीय विधानसभाओं से संविधान सभा के लिये अप्रत्यक्ष तरीके से चुनाव करना भी समाजवादी नेतृत्व को मंजूर नहीं था। उनकी स्पष्ट सोच थी कि वयस्क मतदाताओं द्वारा चुनी गयी संविधान सभा द्वारा ही स्वतंत्र हिन्दुस्तान का संविधान बनाया जाना चाहिये।

जुलाई, 1946 में मुम्बई में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक हुई। गाँधी जी के अनुरोध पर राम मनोहर लोहिया को कांग्रेस का महासचिव बनाने की बात जवाहरलाल जी ने मान ली थी। जयप्रकाश जी को वर्किंग कमेटी में लेने की भी उनकी इच्छा थी। कांग्रेस अध्यक्ष जवाहरलाल स्वयं अस्थायी सरकार में शामिल नहीं होंगे, कांग्रेस मंत्रिमण्डल को आवश्यकतानुसार समर्थन और आलोचना की स्वतंत्रता कांग्रेस संगठन को होनी चाहिये आदि शर्तें लोहिया जी ने रखी थी। जवाहरलाल जी के लिए इसे मानना असंभव था।

मौलाना आजाद ने अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक में कैबिनेट मिशन को स्वीकार करने का प्रस्ताव रखा। समाजवादी आंदोलन के सभी बड़े–बड़े नेताओं ने उस प्रस्ताव का विरोध किया। संशोधन रखे गये। जयप्रकाश नारायण, अच्युत पटवर्धन, अरूणा आसफ

अली तथा डॉ० लोहिया ने प्रस्ताव के परखचे उड़ा दिये।..... सभी समाजवादी नेताओं के भाषणों का सुर था कि एक और ''करो या मरो'' आंदोलन आवश्यक है।

अंत में लोहिया और जयप्रकाश जी ने महासचिव पद तथा वर्किंग कमेटी की सदस्यता स्वीकारने से इंकार कर दिया। अब यह स्पष्ट हो चुका था कि कांग्रेस के साथ समाजवादियों की पटरी नहीं बैठने वाली।

जवाहरलाल जी का 10 जुलाई का पत्रकार सम्मेलन एक बहाना बना और विस्फोटक पदार्थ का गोदाम बने हिन्दुस्तान पर चिंगारी गिरी जिससे चारो ओर आग धधक उठी। मुस्लिम लीग कैबिनेट योजना की स्वीकृति को वापस लिया और फिर 16 अगस्त को सीधी कार्यवाही करने का आह्वन किया। 16 अगस्त को कलकत्ता में ज्वालामुखी फट पड़ा जिस पर 20 अगस्त तक काबू नहीं पाया जा सका।..... लेकिन आग की तरह चारो ओर फैलने वाले इन साम्प्रदायिक दंगों से कैसे बचा जाये, इस बात का समाजवादियों के पास कोई जवाब नहीं था।...

29–30 सितम्बर, 1946 को अच्युतराव जी ने महाराष्ट्र के नंदुरबार में हुए विद्यार्थी कांग्रेस के अधिवेशन की अध्यक्षता की। अगस्त, 1946 के प्रारम्भ से ही लोहिया जी ने गोवा में संघर्ष छेड़ दिया।

अक्टूबर, 1946 में कलकत्ता, मुम्बई तथा अन्य स्थानों पर हुए हिन्दू–मुस्लिम दंगों की आग पहली बार पूर्व बंगाल के नोआखाली तथा टिपेरा ग्रामीण इलाकों में फैल गयी। आगजनी, लूटमार तथा हत्यायें इनसे सम्बंधित समाचारों में कोई नवीनता नहीं रही। ये समाचार आम थे। लेकिन स्त्रियों पर किये गये अत्याचार, अपहरण, बलात्कार, बलपूर्वक रची गयी शादियाँ तथा धर्मपरिवर्तन आदि की खबरों ने सबके दिल को छलनी कर दिया।

26 फरवरी, 1947 को कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का अधिवेशन कानपुर में हुआ। इसकी अध्यक्षता डॉ० राम मनोहर लोहिया ने की। संगठन के महासचिव के रूप में अच्युत पटवर्धन जी ने सकुशल संचालन किया। इस बैठक में यह तय हुआ कि अब पार्टी का नाम कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के बजाय सोशलिस्ट पार्टी होगा। कांग्रेस की सदस्यता की शर्त अब नहीं

रहेगी। इस अधिवेशन में अच्युत पटवर्धन को हटाकर जयप्रकाश नारायण को महासचिव बनाया गया। यहाँ से कांग्रेस और समाजवादी पार्टी अलग–अलग दल बन गये।

3 जून को माउण्टवेटन ने देश विभाजन की योजना की घोषणा की। 13 जून को वर्किंग कमेटी की बैठक बुलाई गयी थी। 14–15 जून को अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी की बैठक बुलाई गयी। इन बैठकों में भारत विभाजन को स्वीकृति प्रदान की गयी। स्वयं गाँधी जी ने, देश की हालत और बिगड़ जाने के कारण तथा दूसरा उपाय शेष नहीं होना, कारण बताया।

दिल्ली में समाजवादी कार्यसमिति और नेताओं की बैठक सम्पन्न हुई। बड़ी जोरदार चर्चा हुई। अंततः सिर्फ महात्मा जी के प्रभाव की वजह से इस प्रस्ताव पर तटस्थ रहने का निर्णय समाजवादी नेतृत्व ने लिया।

राजनीतिक परिदृश्य एवं घटनाक्रम से अच्युतराव का मन राजनीति से उचट गया। बचपन से ही थेयोसोफिस्ट विचारधारा से प्रभावित थे। 1947 में जिद्दू कृष्णमूर्ति विदेश से भारत लौटकर आये। अच्युत निरंतर उनके सम्पर्क में रहते थे। अच्युत के दत्तक पिता सीताराम पटवर्धन जब मृत्युशैय्या पर थे तब उन्होंने अच्युत से वचन लिया था कि वह जीवन भर जिद्दू कृष्णमूर्ति का साथ नहीं छोड़ेंगे, विवाह नहीं करेंगे और अपने जीविकोपार्जन हेतु कोई नौकरी नहीं करेंगे। अच्युत ने अपने दत्तक पिता को दिये गये तीनों वचनों का मृत्युपर्यन्त पालन किया। 1950 के बाद उन्होंने राजनीति से सन्यास ले लिया और पुनः सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज में अध्यापन कार्य शुरू कर दिया जिसे वह 1966 तक करते रहे। सेवानिवृत्ति के बाद वह पूना में रहने लगे। इस दौरान न तो वह किसी से मिलते थे और न ही संवाददाताओं से वार्ता करते थे। संगीत, कला एवं नाटक में उनकी रूचि थी। अशोक मेहता के साथ मिलकर उन्होंने ''भारत में साम्प्रदायिक त्रिकोण'' नामक पुस्तक लिखी। लगभग से 100 से अधिक पुस्तिकायें एवं पैम्फलेट्स अच्युत ने समाजवाद पर लिखी थीं।

इतना महान व्यक्ति शांतिपूर्वक कार्य करते हुए 05 अगस्त 1992 को वाराणसी में चिरनिद्रा में विलीन हो गये।

अच्युत पटवर्धन ने 1950 के बाद सक्रिय राजनीति को छोड़ कर जो आध्यात्मिक जीवन पर अपने को केंद्रित किया वह बहुत सारे लोगों के लिए पहेली बना रहा। नेहरू ने कोशिश की और उनके समाजवादी साथियों ने तो की ही, लेकिन अच्युत पटवर्धन ने फिर राजनीति की ओर रूख नहीं किया। जो राजनीतिक लोग उनसे मिलना चाहते थे उनसे भी मिलने में उनकी रूचि नहीं रही। यहाँ तक कि उनको लिखी चिट्ठियों का जवाब भी नहीं मिलता था।

लगता है एक बार राजनीति से ऊपर उठकर आध्यात्म की ओर उनका कदम अरबिंदो की तरह का ढृढ़ कदम था जिसमें वापसी का विकल्प उन्होंने रखा ही नहीं। सामान्य लोग इस बात को समझ नहीं पाते कि गांधी ने दो बार अरबिंदो से मिलने का प्रयास किया और अरबिंदो मिलने को राजी नहीं हुए। उसी तरह अच्युत पटवर्धन भी नेहरू समेत अन्य नेताओं के आमंत्रण को अस्वीकार कर गए। उनका यशस्वी जीवन इस तरह का एक संदेश देता है : राजनीतिक सत्ता ही सबकुछ नहीं। महान लोग उस सत्ता के पार भी देख सकते हैं।